24.

किन्नर विमर्श : एक अनुशीलन

डॉ. (श्रीमती) धनेश्वरी दुबे

प्रस्तावना

समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में अनेक विवाह समारोह में जाता है और उसके परिवार में भी विवाह अवश्य होते रहते हैं। विवाह होने के पश्चात पुरुषों का एक समूह ,जो कि महिलाओं के समान वस्त्र धारण किए होता है, विवाह वाले घर में आता है और नाच–गाने के बाद बधाईयाँ देता है, साथ ही बच्चा होने का आशीर्वाद भी देता है। इसके बदले में विवाह वाला परिवार उन्हें पैसा और उपहार देकर विदा करता है। पुरुषों का यह समूह किसी परिवार में विवाह समारोह, बच्चा पैदा होने पर ,गृह–प्रवेश या किसी भी शुभ अवसर पर बधाईयाँ देने आता है। खुशी के अवसर पर इसके आगमन को शुभ माना जाता है। इसी समूह को समाज में हिजड़ा या किन्नर कहते हैं। इस समुदाय को किन्नर, हिजड़ा, अरावानिस, कोठी जोगप्पा, शिवशक्ति, मंगलामुखी आदि नामों से भी जाना जाता है। अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट (अप्रैल 2014) ने इस समुदाय को तृतीय लिंग से संबोधित किया है।

किन्नर : परिभाषा

अमेरिकी वैज्ञानिक संगठन के अनुसार– "जिनकी लैंगिक पहचान, अभिव्यक्ति या व्यवहार उनके निर्धारित लिंग से भिन्न होते हैं, किन्नर कहलाते हैं। कभी–कभी किन्नरों को चिकित्सकीय सहायता से दूसरे लिंग में परिवर्तित व्यक्ति या इच्छुक व्यक्ति भी कहते हैं।

मोटमान्स के अनुसार– मोटमान्स ने किन्नर समाज को बहुत ही व्यापक रूप में वर्णित किया है। उन्होंने लिखा है– 1) वे व्यक्ति जो किन्नर समुदाय का हिस्सा हैं। 2) वे व्यक्ति जिसकी शारीरिक पहचाना लैंगिक भूमिका समाज द्वारा अपेक्षित भूमिका या पहचान से भिन्न हैं। 3) वे व्यक्ति जो अपने निर्धारित लिंग [illegible] जो विपरीत लैंगिक वेशभूषा और विपरीत लिंग परिवर्तन के इच्छुक होते हैं, सभी किन्नर कहलाते हैं।

किन्नरों का इतिहास में स्थान

किन्नर समुदाय का अस्तित्व ई.पू. 9वीं शताब्दी से पाया जाता है। हिंदू धर्म, जैन, बौद्ध तथा वैदिक संस्कृति सभी में तीन लिंगों को मान्यता दी गई थी। (वैदिक काल 1500–500 ईसा पूर्व) में तीन लिंगों की चर्चा की गई है– पुरुष प्रकृति, महिला प्रकृति तथा तृतीय प्रकृति। प्राचीन भारतीय कानून, चिकित्सा विज्ञान, भाषाशास्त्र तथा ज्योतिषशास्त्र में भी तृतीय लिंग के बारे में बताया गया है। मनुस्मृति (200 बी.सी–200ए. डी.) में तृतीय लिंग की जैविक उत्पत्ति के बारे में बताया गया है– पुरुष बीज के अधिक मात्रा में होने पर नर शिशु बनता है, स्त्री बीज के अधिक मात्रा में होने पर मादा शिशु बनता है और यदि दोनों बीजों की मात्रा बराबर रहती है तो तृतीय लिंग शिशु बनता है या नर–मादा जुड़वा बच्चे पैदा होते हैं। पुराणों में भी तीन लिंग बताए गए हैं– गंधर्व, अप्सरा और किन्नर। किन्नरों की रामायण और महाभारत जैसे हिंदू धर्म के कई ग्रंथों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं। इनका कामसूत्र से बहुत बड़ा नाता बताया गया है।

मुगल काल में किन्नर समुदाय को विशिष्ट स्थान प्राप्त था। वे राजनीति में कुशल सलाहकार, प्रशासक तथा हरम के संरक्षक के पद पर तैनात थे। मुगल सल्तनत में इनकी वफादारी के लिए शासकों द्वारा इन्हें जमीन प्रदान की गई थी। ये लोग इज्ज़त के साथ अपना जीवन बिताते थे, किंतु ब्रिटिश काल के शुरुआत में किन्नर समुदाय को अनेक राज्यों से अपनी सुरक्षा के लिए सहायता लेनी पड़ी थी। ब्रिटिश कानून ने इनसे जमीन के अधिकार छीन लिए थे। चूँकि इनका जैविक अधिकार खून के रिश्ते पर आधारित नहीं था, इस कारण किन्नरों के जीवन पर संकट आ गया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि वे अपराध में लिप्त रहने लगे। चोरी, डकैती, बंधक बनाना इनका पेशा हो गया। इसकी रोकथाम के लिए 1871 में 'क्रिमिनल ट्राइब एक्ट' लाया गया। इसमें सभी किन्नर समुदाय को शामिल किया गया और उनके लिए सजा का प्रावधान किया गया। आगे चलकर जब भारत आजाद हुआ तो 1952 में यह कानून निरसित किया गया।

किन्नर : अभिप्राय

किन्नर या हिजड़ों से अभिप्राय उन लोगों से है, जिनके जननांग पूरी तरह विकसित ना हो पाए हो अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग , जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है। वैसे हिजड़ों को 4 वर्गों में विभक्त किया जा सकता है– बुचरा, नीलिमा, मनसा और हनसा। वास्तविक हिजड़े तो बुचरा ही होते हैं [illegible] है, नीलिमा किसी कारणवश स्वयं को हिजड़ा बनने के लिए समर्पित कर देते हैं, मनसा तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा अक्सर स्त्रीलिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं और हनसा शारीरिक कमी यथा–

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P.G. COLLEGE KORBA (C.G.)
GOVT. E.V.P.G. COLLEGE ★ KORBA ★